राँची विश्वविद्यालय के अन्तर्गत पीएच० डी० शोधोपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रारूप

उत्तररामचरितम् और प्रशान्तराघवम् का तुलनात्मक अध्ययन

(मानविकी संकाय)

शोध निर्देशिका

डॉ० कंचन कुमारी

सहायक-प्राध्यापिका, संस्कृत विभाग

कार्तिक उराँव महाविद्यालय

गुमला

शोधार्थी

उदित कुमार पाण्डेय

संस्कृत विभाग

राँची विश्वविद्यालय, राँची

उत्तररामचरितम् और प्रशान्तराघवम् का तुलनात्मक अध्ययन

प्रस्तावना

देवभाषा संस्कृत विश्व की समस्त परिष्कृत भाषाओं में प्राचीनतम है। भारत की प्रांतीय भाषाओं की जननी संस्कृत ही है । तमिल , तेलगु , और मलयालम जैसी द्रविड भाषाओं पर भी संस्कृत साहित्य का पर्याप्त प्रभाव दिखाई देता है ।

काव्य की सुंदरता का परख करने वाले शास्त्र का नाम काव्यशास्त्र है । साहित्यशास्त्र का ही दूसरा नाम काव्यशास्त्र है । काव्य और साहित्य समानार्थक है । साहित्य का अर्थ है - "सहितयो: शब्दार्थयो: भावः साहित्यम्" अर्थात एक साथ सम्मिलित शब्द और अर्थ का भाव साहित्य कहलाता है । राजशेखर ने साहित्य की व्याख्या इस प्रकार की है - "शब्दार्थयोर्यथावत्सह-भावेन विद्या साहित्य विद्या" अर्थात सहृदयों को आह्लादित करने वाले शब्द और अर्थ के यथायोग सहयोग वाली विद्या "साहित्यविद्या" कहलाती है ।

कालांतर में "साहित्यशास्त्र" को ही "काव्यशास्त्र" के नाम से जाना जाता है । संस्कृत में काव्य से श्रव्यकाव्य और दृष्यकाव्य इन दोनों को ही ग्रहण किया जाता है ।

नाट्य विधा काव्य का ही एक प्रकार है ।

"काव्येषु नाटकं रम्यम्" कहकर इसकी विशिष्टता को रेखांकित की गई है । नाट्यशास्त्र के रचनाकार आचार्य भारत के अनुसार ऐसा कोई ज्ञान , शिल्प , विद्या , योग एवं कर्म नहीं है जो नाटक में दिखाई ना पड़े -

न तज्ज्ञानं न तच्छिल्पं न सा विद्या न सा कला ।

न स योगो न तत्कर्म नाट्येस्मिन् यन्न दृश्यते ।।

संस्कृत नाटकों की रचना का प्रमुख उद्देश्य है दु:खी , थके हुए एवं शोक से त्रस्त लोगों का मनोरंजन करना है ।जैसा कि नाट्य शास्त्र के प्रथम अध्याय में भरतमुनि ने लिखा है -

दु:खार्त्तानां श्रमार्त्तानां शोकार्त्तानां तपस्विनाम् ।

विश्रान्तिजननं काले नाट्यमेतद् भविष्यति ।।

उत्तररामचरितम् महाकवि भवभूति का प्रसिद्ध संस्कृत नाटक है , जो श्रीराम के उत्तर जीवन की कथा को सात अंकों में प्रस्तुत करता है।

इस नाटक में भवभूति ने रामराज्याभिषेक के पश्चात् के जीवन का चरित्र वर्णित किया है जो महावीरचरित का उत्तर भाग माना जाता है।

करुण रस प्रधान नाटक उत्तररामचारितम् नाट्य जगत की अभूतपूर्व कृति है जिसने नाट्य जगत में अपनी अमिट छाप छोड़ी है ।

उदात्त प्रेम , त्याग और सात्विक चिंतन की पराकाष्ठा इस नाटक के आधार बिन्दु है ।

उत्तररामचरितम् विश्वास की महिमा , प्रेम की पवित्रता , भावनावों की तरंगक्रीड़ा , भाषा के गाम्भीर्य और हृदय के माहात्म्य से अतुलनीय नाटक है। यह नाटक संस्कृत जगत में विशेष स्थान रखता है।

उत्तररामचरितम् पर अनेक टीकाएं उपलब्ध है जिनमें घनश्याम , वीरराघव , नारायण और रामचंद्र बुधेन्द्र की टीकाएं प्रसिद्ध है। इसके अनेक भारतीय संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं।

बीसवीं शताब्दी के नाट्यकारों में डॉ अभिराज राजेन्द्र मिश्र का स्थान अद्वितीय है।

संस्कृत साहित्य की प्रत्येक विधा (महाकाव्य , खण्डकाव्य , गीतिकाव्य , नाट्य एवं कथा) को अपने प्रतिभा से प्रकाशित किया है।

डॉ मिश्र की रचनाओं में प्रसाद गुण की अधिकता है तथा वैदर्भी रीति की प्रधानता है। उपमा एवं रूपक अलंकार उनके साहित्य में अधिक दिखाई पड़ते हैं।

डॉ मिश्र के नाट्य रचनाओं में " प्रशान्तराघवम् " एक महत्त्वपूर्ण सात अंकों का नाटक है। इस नाटक में प्राकृतों के स्थान पर जो वर्तमान लोकभाषा (भोजपुरी , अवधी तथा व्रजभाषा) का प्रयोग किया है।

" प्रशान्तराघवम्" नाटक के तीन प्रमुख बिन्दु है –

- प्राचीन प्राकृत के स्थान पर संस्कृत के साथ अवधी भोजपुरी व्रजभाषा का प्रयोग।
- रामपरक नाटक में विदूषक का प्रयोग। किन्तु इसमें पारंपरिक विदूषकों से भिन्न है। जनक का प्रिय सखा है और सीता आदि राजपुत्रियों के संरक्षक के रूप में मिथिला से अयोध्या आया है।
- नाटक का तृतीय प्रमुख बिन्दु है सीता – निर्वासन – प्रसंग का निषेध। महर्षि वशिष्ठ की सहायता से लक्ष्मण ने सीता को प्रवासी होने से बचा लिया।

शोध उद्देश्य

- उत्तररामचरितम् और प्रशान्तराघवम् का विशेष साहित्यिक महत्व समझना।
- धार्मिक , सामाजिक और मानवीय संदेशों और मूल्यों का ज्ञान प्राप्त करना।

- आध्यात्मिकता , कर्तव्य – परायणता और लोकव्यवहार के महत्त्व को समझना।
- भारतीय संस्कृति के प्रमुख तत्त्वों के ज्ञान का विश्लेषण करना।
- उत्तररामचारितम् एवं प्रशान्तराघवम् में वर्णित लोक व्यवहार एवं मानवीय मूल्यों की प्रासांगिक सिद्‌ध करना।

शोध का लाभ

आज के संस्कृत नाटक में प्राचीन प्राकृतों (महाराष्ट्री , शौरसेनी आदि) का प्रयोग किया जाना संभव नहीं है और प्रयोग किया भी जाए तो समझेगा कौन ?

संस्कृत के साथ आधुनिक नाटक में वर्त्तमान की प्राकृतों का प्रयोग किया जाना चाहिए।

जो कि स्वाभाविक और बोधगम्य भी होगा।

इसलिए प्रशान्तराघवम् में तीन आधुनिक प्राकृतों का प्रयोग किया गया है – भोजपुरी, अवधी तथा व्रजभाषा।

शोध का महत्व

उत्तररामचरितम् विश्वास की महिमा , प्रेम की पवित्रता , भावनाओं की तरंगक्रीड़ा , भाषा के गाम्भीर्य और नैतिकता के महत्त्व को दर्शाता है।

यह नाटक नाट्य जगत में विशेष स्थान रखता है अतः लोक व्यवहार में चरित्रों का गुणगान व्यवहारिकता में लाने हेतु प्रभावी होगा जो कि सुसंस्कृत समाज के निर्माण में महती भूमिका होगी।

प्रस्तुत शोध को निम्नलिखित प्रारूप में प्रस्तुत किया जाएगा।

प्रस्तुत अनुक्रमणिका

प्राक्कथन

कृतज्ञता ज्ञापन

प्रथम अध्याय: -   परिचय

- कवि परिचय
- काव्य परिचय
- नाट्य परिचय

द्वितीय अध्याय: -   कथावस्तु का तुलनात्मक अध्ययन

- उत्तररामचरितम् की कथावस्तु
- प्रशान्तराघवम् की कथावस्तु
- उत्तररामचरितम् और प्रशान्तराघवम् की कथावस्तुओं में तुलनात्मक अध्ययन

तृतीय अध्याय: - पात्रों का परिचय

- उत्तररामचरितम् के पात्र
  - (क) पुरुष पात्र -
  - (ख) महिला पात्र
- प्रशान्तराघवम् के पात्र
  - (क) पुरुष पात्र -
  - (ख) महिला पात्र
- उत्तररामचरितम् और प्रशान्तराघवम् के पात्रों का तुलनात्मक अध्ययन

चतुर्थ अध्यायः - रसतत्त्व का तुलनात्मक अध्ययन

- उत्तररामचरितम् में वर्णित रसतत्त्व
- प्रशान्तराघवम् में वर्णित रसतत्त्व
- उत्तररामचरितम् और प्रशान्तराघवम् में वर्णित रसतत्त्वों का तुलनात्मक अध्ययन

पंचम अध्यायः- दोनों नाटकों में प्रयुक्त भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन

- प्रथम श्रेणी के पात्रों की भाषा
- द्वितीय श्रेणी के पात्रों की भाषा
- दोनों नाटकों की भाषा प्रयोग का तुलनात्मक अध्ययन

उपसंहार

विशेषः- उपर्युक्त अध्यायों में परिवर्तन एवं परिवर्धन संभव है।

सहायक ग्रंथ सूची -

1. उत्तररामचरितम् - डॉ रमाकान्त त्रिपाठी

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन , वाराणसी - पुनर्मुद्रित संस्करण -2007

2. प्रशान्तराघवम् - डॉ अभिराज राजेन्द्र मिश्र
वैजयन्त प्रकाशन , इलाहाबाद - प्रथम संस्करण -जनवरी 2008

3. संस्कृत नाटक - मूल लेखक - ए.बी.कीथ, भाषांतरकार- डॉ उदयभानु सिंह

मोतीलाल बनरसीदास , वाराणसी - पुनर्मुद्रण - 1987

4. साहित्यदर्पण - आचार्य शेषराज रेग्मी
चौखम्बा कृष्णदास अकादमी , वाराणसी , पुनर्मुद्रित - 2016

5. कव्यप्रकाश: - डॉ रामसागर त्रिपाठी
मोतीलाल बनारसीदास , वाराणसी , पुनरमुद्रित - 1991

6. दशरूपक - डॉ सुधाकर मालवीय
चौखम्बा अमरभारती प्रकाशन , वाराणसी , प्रथम संस्करण 1979

7. साहित्यकल्पतरु - डॉ अभिराज राजेन्द्र मिश्र
वैजयन्त प्रकाशन , इलाहाबाद , प्रथम संस्करण - 2010

8. अभिराज राजेन्द्र मिश्र व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व - डॉ राजेशकुमारी मिश्र
वैजयन्त प्रकाशन - प्रथम संस्करण - 2005